

साईं व्हाइब्रियोनिक्स पत्रिका

www.vibrionics.org

“ जब आप किसी हतोत्साहित, निराश या रोग ग्रस्त व्यक्ति को देखते हो,
वहीं आपका सेवा क्षेत्र है ”..... श्री सत्य साईं बाबा

खण्ड 4 प्रकाशन 2

मार्च/ अप्रैल 2013

ॐ डा.जीत के अग्रवाल की मेज से ॐ

प्रिय चिकित्सक

फिर एक बार वह घड़ी आई है जो हमे प्रिय स्वामी की सदेह मौजूदगी की कमी महसूस कराती है। स्वामी हमे छोड़कर गए हि नही ऐसा मन को समझाने की बजाए कि हमे स्वामी की प्रेममय यादों मे डूब कर उनका कार्य आगे बढ़ाना है। स्वामी ने हमे अति अदभुत व्हाइब्रो सेवा दी है। स्वयं के साथ साथ दूसरों को भी रोग मुक्त करने के साधन के रुप मे स्वामी की अनुकम्पा एवं करुणा को अनुभव करने का अवसर प्रदान किया है।

आपको जानकर खुशी होगी कि गत माह हमने अधिकारिक दर्जा प्राप्त किया है। इन्टर नेशनल असोसिएशन ऑफ साईं व्हाइब्रियोनिक्स प्रैक्टिशनर्स (IASVP) अब एक पंजीकृत संस्था बन चुकि है। मरीजों के इलाज मे जुटें तथा नियमित मासिक रिपोर्ट भेजने वाले सभी सक्रिय सदस्यों को हम इस संस्था कि सदस्यता हेतु आमंत्रित करते है। आवश्यक आवेदन फार्म आप हमारी वेबसाइट से शीघ्र हि डाउनलोड कर पाएंगे। पंजीकृत सदस्यों को अधिकारिक तौर पर व्हायब्रियोनिक्स चिकित्सा हेतु प्रमाण पत्र एवं पहचान पत्र भी दिया जाएगा। मात्र रुपयें सौ कि वार्षिक फी प्रशासनिक खर्च हेतु ली जाएगी। सदस्यों को IASVP के बायलॉज का अनुपालन करना होगा अन्यथा उनकी सदस्यता रद्द हो सकती है।

हमारे व्हाइब्रियोनिक्स परिवार का विस्तार संसार के 80 देशों मे हो चुका है और हम चाहते है कि अधिक सदस्यता वाले देशों मे भी हम IASVP पंजीकरण करे। इससे हमे अधिकृत तरीकेसे व्हाइब्रो चिकित्सा एवं व्हाइब्रो प्रशिक्षण दे सकते है। यद्यपि यह सब हम आपके सहकार्य के बिना नही कर सकते। हम विदेशों के सभी सक्रिय चिकित्सकों को आमंत्रित करते है कि वें अपने अपने देशों मे इस दृष्टि से पहल करे।

आपसे प्राप्त होने वाली जानकारी के बल पर व्हाइब्रियोनिक्स निरंतर प्रगती पथ पर है। आपमे से कुछ लोगो को याद होगा जब कॉफी के लिए मनाई थी और हमे रेमेडी को टीव्ही तथा मोबाइल से दूर रखना पडता था। फिर जानकारी मिली थी रेमेडी को किरणोत्सर्ग से बचाने की। सन 2007 मे जब स्वामी ने 108 सीसी बक्से को आशिर्वाद दिया तब सभी रेमेडीज मे किरणोत्सर्ग अवरोधी तत्व मिलाए गए थे। यद्यपि यह बक्से अन्जाने मे थोडी अवधी के लिए किरणोत्सर्ग वाले उपकरणों के पास रखे जाने पर ही सुरक्षित है। हमे इन काम्बोज के सफल परिणामों की सकारात्मक जानकारी मिलती रही और हमने इन काम्बोज को और 300 रोगो के इलाज के लिए विस्तारित किया। हमने नया बक्सा बनाया जिसे स्वामी ने सन 2008 मे आशिर्वाद दिया (चित्र आपकी 108 सीसी बुक मे है)। अतिरिक्त 200 रोगो के इलाज के समावेश के साथ सुधारित 108सीसी बक्सा स्वामी के चरण कमलों पर अगस्त 2011 मे अर्पित किया गया। जब भी हमे उपयोग पूर्ण जानकारी मिलती है हमारी सक्रिय रिसर्च टीम अभ्यास एवं जांच पडताल करती है और परिक्षणों के बाद हि हम यह जानकारी सभी चिकित्सकों के लिए प्रसारित करते है।

आप लोगो से लगातार मिलनेवाली प्रेरणा के फल स्वरुप व्हायब्रियोनिक्स आन्दोलन को गति प्रदान करने हेतु हम स्वयंसेवको की तलाश मे है। भारत के कुछ व्हाइब्रो चिकित्सको ने प्रशासनिक एवं प्रबंधकीय कार्यों के लिए सहायता कि पेशकश की है, आप सभी को हार्दिक धन्यवाद। मैने भारत के विभिन्न राज्यों के समन्वयकों से भेट कर

चर्चा की है और हम भारत के विभिन्न राज्यों को झोन मे बांटने की प्रक्रिया कर रहे है और हर झोन के लिए उप समन्वयक नियुक्त किए जाएंगे। अब तक राज्य समन्वयकों ने रिफ्रेशर वर्कशाप आयोजन का कार्य बडे सराहनीय तरीके से किया है जिसका उपयोग न केवल सक्रिय चिकित्सकों को हुआ बल्कि अनियमित चिकित्सको को भी प्रोत्साहन मिला। अन्य देशो मे भी यह करने की आवश्यकता है।

मैं विदेश में व्हाइब्रो चिकित्सा करने वाले सभी सक्रिय चिकित्सकों से अपील करता हूँ कि मैं आगे आएँ और व्हाइब्रियोनिक्स को अपने देश में विस्तारित करें। यह स्वामी का कार्य है – सीधे उन्हीं के मार्गदर्शन में यह हुआ है। हमारा कर्तव्य है कि इसे न केवल जीवित रखें बल्कि दूर दूर तक फैलाएँ, विस्तारित करें। स्वामी का दर्शन अपने हृदय में करें और सभी पर प्रेम करने और सभी की सेवा करने के लिए प्रेरित हो जाओ।

साईं की प्रेममय सेवा में

जीत अग्रवाल

ॐ महत्वपूर्ण सूचना – सभी चिकित्सकों के ध्यानाकर्षण हेतु ॐ

साईं व्हाइब्रियोनिक्स के विस्तार के साथ यह जरूरी हो गया है कि हम समूचे विश्व के चिकित्सकों को समान रजिस्ट्रेशन नंबर दें। इसी उद्देश्य से हमने सभी रजिस्ट्रेशन नंबरों को पांच अंकों की अनिवार्यता का नियम बनाया है। सभी पुराने पांच अंकों वाले रजिस्ट्रेशन नंबर 0 से आरंभ होते थे, इस 0 की जगह पर 1 अंक होगा। सभी पुराने चार अंकों वाले रजिस्ट्रेशन नंबरों के आगे 0 लगाकर उन्हें पांच अंकों वाला बना दिया गया है।

उदाहरण के लिए अगर आपका पुराना रजिस्ट्रेशन नंबर 00287 अथवा 2874 था तब आपका नया नंबर होगा 10287 अथवा 02874।

ॐ सम्मिश्रण की सफलताओं का व्यक्ति वृत्त (केस हिस्ट्रीज़) ॐ

1. प्रसूति के बाद से लगातार रक्तस्राव ^{10211...भारत}

चौदह वर्ष पूर्व हुई प्रसूति के समय से यह महिला मासिक धर्म के दौरान होनेवाले अत्याधिक रक्तस्राव से तथा महिनेभर भी रुक रुक कर होने वाले रक्तस्राव से पिडीत थी। उन्होंने कई महंगी एलोपैथी दवाओं का इलाज भी आजमाकर देखा परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। रजोधर्म के दौरान होनेवाली खून की कमी रक्ताधान (ब्लड ट्रान्सफ्यूजन) द्वारा दूर की जाती थी। इसी दौरान मैं क्षयरोग से भी पिडीत हुई जिसके फलस्वरूप मैं और भी कमजोर हो गई। उन्हें व्हाइब्रो चिकित्सक द्वारा निम्न कॉम्बो दिया गया—

CC8.7 Menses frequent + CC19.3 Chest infections chronic...TDS.

एक माह की अवधि में ही रक्तस्राव पूरी तरह रुक गया और क्षय रोग के लक्षण भी दूर हो गए। इस अद्भूत पद्धति से हुए रोग निवारण से मैं अत्यंत प्रसन्न हो गई। क्षय रोग के लक्षणों कि पुनरावृत्ति से बचाव हेतु मरीज के निवेदन पर उपरोक्त कॉम्बो उन्हें जारी रखा जा रहा है।

2. श्वेतरक्तता (लूकेमिया) ^{11993...भारत}

72 वर्षीय वृद्ध व्यक्ति को श्वेतरक्तता के लक्षणों को देख कर रक्त के कर्करोग की आंखिरी अवस्था बताया गया। मैं मधुमेह से भी पिडीत थे तथा इन लक्षणों के कारण विगत दो वर्षों से शय्याग्रस्त थे। डॉक्टरों कि राय में मैं अधिक से अधिक दो सप्ताह के साथी थे। उन्हें निम्न कॉम्बो दिया गया—

#1. CC2.1 Cancers - all + CC3.1 Heart tonic...TDS

#2. CC6.3 Diabetes + CC12.1 Adult tonic + CC15.1 Mental & Emotional tonic...TDS

दि. 28 सितंबर 2011 को इलाज प्रारंभ किया गया। एक माह बाद उनके सुपुत्र ने, जो डॉक्टर भी है, उनके रक्त की जांच करने पर 50 प्रतिशत सुधार पाया। तीन माह बाद 75 प्रतिशत सुधार हुआ एवं अप्रैल 2012 में मरीज का रक्त सामान्य पाया गया। पूरी तरह ठीक होने के कारण मरीज ने कॉम्बो का सेवन बंद कर दिया। एक वर्ष तक सामान्य रूप से जीवन ज्ञापन करने के बाद नवंबर में बीमारी का पुनरावर्तन हुआ और मरीज ने शांतिपूर्वक देह त्याग किया।

नोट: सामान्यतः मरीज खांस कर वयोवृद्ध मरीज बीमारी ठीक होने के बाद भी काम्बो का सेवन लंबी अवधि तक जारी रखते हैं।

+++++

3. पीठ दर्द 02854...UK यूके

44 वर्षीय पुरुष मरीज विगत 22 वर्षों से (खेलकूद के दौरान हुई दुर्घटनाओं के फलस्वरूप उभरे) पीठ दर्द से पिडीत थे। उन्हें निम्न काम्बो दिया गया –

CC15.1 Mental & Emotional tonic + CC20.5 Spine...BD

रेमेडी लेने के तीन सप्ताह बाद वें 50 प्रतिशत राहत महसूस करने लगे और दो माह बाद उनका पीठ दर्द पूरी तरह जा चुका था। अब वें दिन में एक बार OD वही काम्बो ले रहे हैं।

+++++

4. बदहजमी और उल्टी से पिडीत कुत्ता 02871...अमरीका

डेढ वर्ष का कुत्ते का बच्चा बदहजमी और उल्टी से पिडीत था। चिकित्सक ने उस पिल्ले के लिए निम्न काम्बो बनाया –

CC1.1 Animal tonic + CC4.8 Gastroenteritis... 5 गोलीयां 200 मि.लि. पानी में और 5 मि.लि. का डोस 10 – 10 मिनट के अंतराल पर दो घंटों तक पिलाया गया उसके बाद दिन में तीन बार यह खुराक पिलायी गई।

पहली खुराक में ही सुधार दिखने लगा तथा वह पिल्ला दवां पिये के लिए बहोत उत्सुक था। यह काम्बो अगले तीन दिनों तक दिनमें तीन बार पिलाया गया फिर डोसेज घटा कर दिनमें दो बार और सुरक्षा कि दृष्टि से लक्षणों का पुनरावर्तन रोकने हेतु सप्ताह भर तक दिन में एक बार वही काम्बो पिलाया गया।

+++++

5. पेड़ों के लिए 00437...भारत

प्रायोगिक तौर पर इस चिकित्सक तथा उनकी पत्नी ने उनके बगीचे में लगे पेड़ों पर **CC1.1 Animal tonic + CC1.2 Plant tonic** का पानी में मिलाकर छिड़काव किया। परिणाम चमत्कार से कम नहीं था और मामूली बा.ढ वाले पौधों का नई जिंदगी मिलने की भांति पुनरुत्थान पाया गया। यह परिणाम एक संतोषजनक अनुभव था।

नोट: यह आश्चर्यकारक सम्मिश्रण है। संभवतः जमीन से उन पौधों को न मिलने वाला ऐसा कोई तत्व एनिमल टानिक के माध्यम से उन पौधों को मिल गया होगा, जैसे **NM35 Worms** के कपन।

+++++

6. हड्डी टूटे पांव के मांस का सड़ाव (गेंग्रीन) 11483...भारत

22 वर्षीय युवक के बाएं पांव की हड्डी दुर्घटनाओं में टूटी थी। किसी अस्पताल में उनका इलाज करवाया गया तथा उनके पांव की टूटी हड्डी में राड डाला गया। चार माह बाद, प्लास्टर खोलने पर पाया गया कि हड्डी जुड़ी नहीं है तथा मांस का सड़ाव होने लगा है। मरीज 6 जनवरी 2013 को जिस कैम्प में आया था वहां अस्थि शल्यचिकित्सक भी मौजूद थे तथा उन्होंने 50 प्रतिशत सुधार की संभावना बताते हुए आपरेशन का सुझाव दिया। अगले एक माह तक उस मरीज को निम्न काम्बो दिया गया—

NM3 Bone I + NM20 injury + NM25 Shock + NM59 Pain + SM15 Circulation + SR264 Silicea 200C + SR271 Arnica 6C + SR293 Gunpowder + SR298 Lachesis 30C + SR325 Rescue + SR405 Ruta 6C + SR408 Secale corn...6TD for one week followed by TDS.

7 फरवरी 2013 को जांच के दौरान डाक्टर ने पाया कि हड्डी की बाढ हो रही है तथा जख्म भी भरने लगा है। डाक्टर ने आपरेशन की जरूरत से इन्कार किया। जख्म की नियमित रूप से मरहम पट्टी का सुझाव दिया गया। 3–4 दिनों में वह युवक चलने फिरने लगा।

तीन दिनों बाद जब मरीज मरहम पट्टी करवाने अस्पताल पहुंचा तब पाया गया कि त्वचा भी नई आ रही है, केवल एक जगह से पीप का बहाव हो रहा था। उन्हे दिए जा रहे काम्बो मे **NM16 Drawing** मिलाया गया। जखम अब पूरी तरह भर चुकी थी परंतु उपरोक्त काम्बो डोसेज घटाकर अब भी दिया जा रहा है।

+++++

7. प्रेमभंग 11467...भारत

25 वर्षिय शिक्षक अत्याधिक मानसिक बोझ और तनाव से ग्रस्त थे। पांच वर्षों से उनकी यारिन रही लडकी ने विवाह प्रस्ताव टुकराने के सदमे को वें सह नहीं पा रहे थे। भावनिक संतुलन खोने की वजह से वे गर्दन और कांधों के निरंतर दर्द से पिडीत हो गए। चिकित्सक ने उन्हे निम्न काम्बो दिया –

SR258 Kali Phos + SR271 Arnica 30C + SR296 Ignatia 30C + SR311 Rhus Tox 200C + SR325 Rescue + SR405 Ruta 30C....TDS.

उपरोक्त काम्बो के केवल एक दिन के सेवन से हि मानसिक रूप से वें बेहतर महसूस करने लगे तथा अगले 6 दिनों मे निराशा और तनाव से मुक्त हो गए। उनके कांधे और गर्दन का दर्द भी दूर हो गया।

+++++

8. खून के नमूने पर बनाए नोज़ोड द्वारा रोग निवारण 02836...भारत

64 वर्षिय पुरुष विगत दस वर्षों से घुटनों के दर्द से पीडित थे। वें स्थूलकाय थे तथा बदहजमी, निद्रानाश, भय, चिंता एवं तनाव से गुजर रहे थे। किसी भी कारोबार मे स्थिरता नहीं पा रहे थे। विगत 7 वर्षों से दोनो टखनों मे वंशानुगत खुजली से वे परेशान थे। उनके **खून के नमूने से बनाई 200 सी** पोटेन्सी की रेमेडी द्वारा उनका इलाज दि. 30 नवंबर 2011 को आरंभ हुआ। पहले सप्ताह मे पुलआउट के मद्येनजर खुराक दिन मे एक बार दी गई। दूसरे सप्ताह मे खुराक दिन मे दो बार तथा दि. 15 दिसंबर 2011 से दिन मे तीन बार दी गई। रेमेडी का परिणाम चमत्कारीक था। पहले सप्ताह मे ही उनके घुटनों का दर्द 90 प्रतिशत ठीक हो चुका था। वें हलकाई, प्रसन्नता तथा चुस्ती महसूस कर रहे थे। दि. 8 मार्च 2012 को बाए टखनें की खुजली 40 प्रतिशत तथा दाहिने टखनें की खुजली मे 80 प्रतिशत सुधार पाया गया। उनका इलाज केवल नोज़ोड द्वारा, एलोपैथिक अथवा आयुर्वेदिक या अन्य किसी इलाज बिनाही जारी रखा गया। दि. 8 जुलै 2012 तक बाए टखनें की खुजली मे 80 प्रतिशत एवं दाहिने टखनें की खुजली मे 90 प्रतिशत सुधार पाया गया। खुजली के इलाज पूर्व तथा इलाज के बाद की तस्वीरें नीचे दी गई है।

Photograph taken on 08/03/2012



Photograph taken on 08/07/2012



महत्वपूर्ण अनुस्मारक

सशक्त रोग निवारक उपकरण के रूप मे साईराम हिलींग पोटेन्टाइजर मशीन द्वारा बनाए गए नोज़ोड की कहानीयां हम सुनते रहते है। हमे 108 सी सी बक्से तथा पोटेन्टाइजर मशीन से होने वाले रोग निवारण के किस्से भी सुनने मिल रहे है। विश्व भर के अन्य चिकित्सकों तथा मरीजों के लाभ हेतु

भविष्यमें कृपया अपनी सफल केसेस का ब्यौरा इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु हमें भेजे।

What is new?

नई खोज

वनस्पती प्रयोग

पिछली पत्रिका में वर्णन किए गए वनस्पती प्रयोगों को हमने जारी रखा है। अब तक के परिणामों से हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से व्हाइब्रियोनिक्स के प्रयोग वाले पेड़ों के पत्ते बड़े या फूलों का आकार बड़ा, अधिक उंचाई अथवा आधिक शाखाएं एवं पेड़ों का सामान्य रूप सशक्त पाया गया। हम सभी चिकित्सकों को अनुरोध करते हैं कि सी. सी. 1.2 प्लान्ट टानिक तथा अन्य काम्बो के पेड़ों पर किए प्रयोगों के परिणाम, फोटो तथा अन्य जानकारी सहित हमें भेजे ताकि अनुसंधान की विस्तृत रिपोर्ट तयार की जा सके। एक और महत्वपूर्ण नतीजा यह था कि बीजों को साधे पानी में भोगोने की अपेक्षा व्हाइब्रियोनिक्स सोलुशन में 24-48 घंटों तक भोगोने पर उनकी जड़ें लंबी तथा बालों जैसी बहोत सारी निकल आयी। बहोत सारे बीज खुलकर अंकुरित हुए पाए गए जबकि अन्य बीजों में से कुछ ही बीजे अंकुरित हुई थी।

स्वास्थ्य नुस्के

(Health Tips)

साई व्हाइब्रियोनिक्स द्वारा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी एवं लेख केवल शिक्षा हेतु दिए जाते हैं; यह जानकारी वैद्यकीय परामर्श नहीं है। मरीजों की विशिष्ट वैद्यकीय अवस्था हेतु उन्हें उनके अपने डाक्टर से परामर्श करने की सलाह दे।

कॉर्डलेस एवं सेलफोन तथा आपका स्वास्थ्य



विद्युतचुंबकीय क्षेत्र (Electromagnetic fields or EMFs) उर्जा क्षेत्र का वह रूप है जो सभी विद्युत उपकरणों तथा यंत्रों एवं सेलफोन टॉवरों तथा विद्युत तारों के इर्दगिर्द बनता है। यह सत्य है कि इन वस्तुओं से निर्माण हुए EMFs स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं अतः हर व्यक्ति ने इनसे कम से कम पारस्परिक क्रिया (interaction) का प्रयास करना चाहिए। आपका शरीर विद्युत प्रवाह के प्रति संवेदनशील होता है (कुछ शारीरिक प्रक्रियाएं वास्तवमें विद्युत प्रवाह पर निर्भर होती हैं), अतः यह बोधगम्य है कि सेलफोन, कॉम्प्युटर, माइक्रोवेव, टेलीविजन तथा अन्य विद्युत यंत्रों से निकलने वाले EMFs के विकिरणों से आप कैसे प्रभावित हो सकते हैं। परंतु क्या इनमें कोई एक उत्पादन ऐसा है जो दूसरे उपकरणों की अपेक्षा अधिक हानिकारक है? एक ऐसा उपकरण जिसे आप रोज इस्तमाल कर रहे हैं और जो आपके शरीर को नुकसान पहुंचा रहा है? जीहां! अनुसंधान मिले संकेतनुसार सेलफोन अन्य उपकरणों की तुलना में 100 गुना ज्यादा खतरनाक हो सकते हैं।

कॉर्डलेस फोन

स्वीडन विश्व विद्यालय के वैज्ञानिक लेनार्ड हार्डेल, माइकेल कार्बेरी एवं केजेल हासन के कथनानुसार घर में कॉर्डलेस फोन यंत्र के आपके स्वास्थ्य पर होने वाले परिणामों की तुलना आपके दीवान खाने (drawing room) में मोबाइल फोन के टॉवर लगाने के साथ की जा सकती है। विभिन्न वैद्यकीय विशेषज्ञों द्वारा इस मत का समर्थन किया गया है। हार्ले स्ट्रीट लंदन के चिकित्सक डॉ. डेविड डौसन कहते हैं, " मैं कॉर्डलेस फोन वाले हर व्यक्ति को सलाह दूंगा कि आप कॉर्डलेस बदलकर प्लग इन वाला सामान्य फोन लेले।"

मोबाइल फोन

विलंबित वार्तालाप हेतु सेलफोन का इस्तमाल न करे अथवा दूसरों को भी सेलफोन पर आवश्यकता से अधिक वार्तालाप में व्यस्त न रखे। एक स्वीडीश रिपोर्ट के अनुसार केवल दो मिनट के वार्तालाप से मस्तिष्क पर होनेवाले प्राकृतिक विद्युत बदलाव का असर एक घंटे तक रहता है। सन 2007 में डॉ. लेनार्ट हार्डेल ने पाया कि सेलफोन का इस्तमाल करने वालों में मस्तिष्क या रीढ़ में संघाती अर्बुद (malignant tumour) का खतरा बढ़ जाता है।

उन लोगों के लिए जिनका व्यवसाय उन्हें फोन पर अधिक समय तक वार्तालाप करने पर मजबूर करता है हमारी सलाह यह है कि (स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में) विशिष्ट पोषक आहार का अतिरिक्त सेवन करें। कर्मचारीयों के स्वास्थ्य की दृष्टि से कॉल सेंटर में वैज्ञानिकों द्वारा अनुमोदीत EMF संरक्षक उपकरण लगाना अनिवार्य है। डॉ. बाजपेयी कहते हैं, "EMF के परिणामों से बचने के लिए वर्तमान में प्रगत तकनीक उपलब्ध है जो आपकी जैव ऊर्जा तथा प्रतिरक्षित प्रणाली को बढ़ाती है।"

यद्यपि विकिरणों के स्वास्थ्य के लिए खतरों पर और अभ्यास की आवश्यकता है, फिर भी यथासमय लिए गए जागरूक कदम (जैसे—तुलनात्मक कम विकिरण निर्माण करने वाले उपकरणों का इस्तमाल) आपके घर पर मंडराने वाली इन तरंगों से आपके लाइनों का रक्षण कर सकते हैं। यद्यपि अनेक लोगों ने टेलीफोन (land lines) पूरी तरह त्याग दिए हैं, अगर आपके घर टेलीफोन है तब आप कॉर्डलेस को बंद कर टेलीफोन के उपयोग का गंभीरता के साथ विचार कर सकते हैं।

कॉर्डलेस से निकलने वाली EMF विकिरणों से अनेक स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं, जैसे—

- ❖ अपठन (Learning Disorders)
- ❖ मनोदशा एवं आचरण में बदलाव
- ❖ तंत्रिका प्रणाली में विकार
- ❖ कर्करोग जिसमें श्वेतरक्तता, स्तन का कर्करोग तथा मस्तिष्क का अर्बुद सामिल है
- ❖ निद्रानाश
- ❖ सिरदर्द

मोबाइल फोन की अपेक्षा टेलीफोन को पहले ही से सुरक्षित माना जाता रहा है, और आज भी कॉर्डफोन सुरक्षित है, परंतु कॉर्डलेस फोन में EMFs निकलते हैं जो 6 वोल्ट प्रति मीटर होते हैं अर्थात् मोबाइल टॉवर से 100 मीटर की दूरी पर पाए जाने वाले EMFs से दुगुने। चार्जर से दो मीटर की दूरी पर विकिरण 2.5 वोल्ट प्रति मीटर होते हैं जो वैज्ञानिकों द्वारा सुरक्षित मात्रा से 50 गुना अधिक है। एक मीटर की दूरी पर यह खतरा 120 गुना बढ़ जाता है और फोन से आपके 100 मीटर दूर जाने पर ही वह 0.05 वोल्ट प्रति मीटर रह जाता है। कॉर्डलेस की कार्य करने के तरीके की वजह से ही फोन बंद होने पर भी चार्जर एवं हैंडसेट लगातार तेज विकिरण बिखेरता रहता है।

एक्सपोजर कम करने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

अगर आप के पास कॉर्डलेस फोन है तब आप यह सोचिए कि उसे आप टेलीफोन में कैसे बदल सकते हैं। यद्यपि आपको कॉर्डलेस फोन जैसी आजादी नहीं मिलेगी फिर भी ऐसा कर सकते हैं कि आप ज्यादातर जहाँ बैठते हैं उस कमरे में टेलीफोन रखें। कॉर्डलेस फोन बदलने से आप घरके EMF विकिरणों में कमाल की कमी ला सकते हैं और अपने परिवार को अधिक स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली प्रदान कर सकते हैं।

अगर आप कॉर्डलेस के बिना रह नहीं सकते तब उच्च फ्रिक्वेन्सी की बजाए 900 मेगाहर्ट्ज़ का फोन रखिए। 900 मेगाहर्ट्ज़ फोन की अपेक्षा अधिकांश 2.4 तथा 5.8 गीगाहर्ट्ज़ फोन बेस स्टेशन लगातार प्रसारण करते हैं। 900 मेगाहर्ट्ज़ कॉर्डलेस फोन में एनॉलॉग सिग्नल होते हैं और 2.4 तथा 5.8 गीगाहर्ट्ज़ फोन में जैविक दृष्टि से हानिकारक पल्स डीजीटल सिग्नल होते हैं। रात में फोन को अपने बिस्तर से दूर रखें ताकि सोते समय आप EMFs से दूर रह सकें।

यद्यपि विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा विद्युतचुंबकीय विकिरणों के स्वास्थ्य पर होने वाले विपरीत परिणामों की पुष्टि अभी नहीं की गई, हम इतना ही कह सकते हैं कि हमारी पद्धति में परिणामों की गणना नहीं हो पा रही है। अतः ठोस सकारात्मक परिणामों की तुलना में नकारात्मक परिणाम सामान्यतः अधिक स्विकृति पाते हैं।

Sources:

http://www.naturalnews.com/034078_cordless_phones_EMFs.html

<http://bodyecology.com/articles/little-known-dangers-of-emf.php>

<http://www.emf-health.com/reports-cordlessphones.htm>

<http://www.emfprotectionitd.com/pages/Cordless-Phones-and-Cell-Phones>

+++++

Health Benefits of Asparagus



Asparagus is a springtime vegetable that is versatile and uniquely delicious. It is the perfect time of year to get out and find some locally grown, preferably organic asparagus. The asparagus is a member of the lily family. It grows easily in the home garden right in the flower bed - it is a perennial and can yield a harvest for decades. Asparagus can be planted as seeds or roots any time of the year.

Asparagus was grown for food and medicinal purposes over 2000 years ago. Greeks and Romans believed in its healing and medicinal properties. Nowadays, it is recognised as a particularly healthy vegetable thanks to the range of nutrients, vitamins and minerals it contains.

Asparagus is also one of the only vegetables to contain inulin, which feeds friendly bacteria that live in the large intestine. Studies show that asparagus balances insulin levels, which means that it powerfully prevents diabetes. Ensuring that our insulin levels are stable is one of the most important things we can do for our health. It allows us to live long and feel good. Its unique mineral profile makes it an effective natural diuretic. Natural diuretics promote the formation of urine in the kidneys, aiding in detoxification and cleansing.

This makes it a great food for preventing yeast overgrowth, and it generally keeps the digestive system and belly well.

Health benefits of asparagus are many. Here are seven reasons why asparagus keeps us healthy:

1. Detoxing our system - asparagus has 288 milligrams of potassium per cup. Potassium is known for reducing belly fat. It also contains 3 grams of fibre which cleanses the digestive system. It has virtually no natural sodium so no bloating during PMS, has no fat or cholesterol, and one cup has only 40 calories. According to a clinical dietician at UCLA Medical Centre, USA, asparagus is the ultimate in detox vegetables.

2. Anti-aging purposes - asparagus is rich in potassium, vitamin A, and foliate. It is also very high in glutathione - an amino acid compound with potent antioxidant properties; a must as an aging deterrent. Glutathione (GSH) is an antioxidant that protects cells from toxins such as free radicals. Another anti-aging property of this delicious spring veggie is that it may help our brains fight cognitive decline. Like leafy greens, asparagus delivers foliate which works with vitamin B12—found in fish, poultry, meat and dairy—to help prevent cognitive impairment. In a study from Tufts University, USA, older adults with healthy levels of foliate and B12 performed better on a test of response speed and mental flexibility. If you're 50 plus, be sure you're getting enough B12 - your ability to absorb it decreases with age.

3. Protection against cancer - asparagus is high in foliate which is now known to be an important protection against cancer. **Note:** Folate is found naturally in leafy green vegetables, and citrus fruits. While folic acid is said to be the same as foliate, folic acid is the supplemental (pill) form. It is always recommended that you get health benefits from eating healthy whole foods.

4. Reducing pain and inflammation - it is the foliate that helps reduce inflammation.

5. Preventing osteoporosis and osteoarthritis - asparagus has vitamin K which studies have shown can help prevent osteoporosis and osteoarthritis. Vitamin K aids in bone formation and repair. It is also necessary for the synthesis of osteocalcin. Osteocalcin is the protein in bone tissue on which calcium crystallizes. Asparagus has been listed as the number one source of vitamin K.

6. Reducing the risk of heart disease - it is the foliate that has been shown to reduce the risk of heart disease.

7. Preventing birth defects - getting enough foliate (doctors often recommend the folic acid supplement) is especially important for women who are pregnant or plan to become pregnant. Having a foliate deficiency has been correlated with increased risk of Spina Bifida (a spinal cord birth defect) and also anencephaly (a neural tube defect). Foliate helps to regulate embryonic and foetal nerve cell formation and may also help to prevent premature births.

Additionally, studies have shown that the nutritional benefits of asparagus can help prevent and treat urinary tract infections and kidney stones. Overall, asparagus is rich in potassium, vitamin A, foliate, glutathione, and vitamin K. It is high in fibre, has no sodium, is low in calories and has no cholesterol or fat.

The most common type of asparagus is green, but you might see two others in supermarkets and restaurants: white, which is more delicate and difficult to harvest, and purple, which is smaller and fruitier in flavour. You may notice some asparagus spears are thick and some are thin. The thick ones are best for roasting or steaming; latter is the best and also very quick. The thin spears are ideal for the grill or if you are planning to sauté. *Please note:* Certain health practitioners recommend not mixing asparagus with artichokes and spinach in the same meal, as their juices are not compatible.

For optimum health benefits, it is suggested that asparagus be eaten raw. Before eating, the woody stem should be removed from both the thick spears and the thin. Peel only the thick spears before cooking. It is delectable finely chopped in salads, barbecued with mustard, or lightly steamed. No matter which type of asparagus you choose, it is a tasty and versatile vegetable that can be cooked in myriad ways or enjoyed raw in salads.

Sources:

- http://www.naturalnews.com/023368_asparagus_benefits_food.html
- <http://bkcreative.hubpages.com/hub/10-Super-Health-Benefits-of-Asparagus>
- http://www.eatingwell.com/blogs/health_blog/5_powerful_health_benefits_of_asparagus_you_probably_didn_t_know
- <http://www.google.co.in/url?sa=t&rct=j&q=asparagus%20benefits&source=web&cd=6&cad=rja&sqi=2&ved=0CFYQFjAF&url=http%3A%2F%2Fwww.pureinsideout.com%2Fasparagus-extraordinary-health-benefits.html&ei=-YxQUbbyGpLU8wTAnYDgCw&usq=AFQjCNFoSkx5Z9cnFFtksP09Kvx9UloJw&bvm=bv.44158598,d.eWU>
- <http://www.juicing-benefits-toolbox.com/health-benefits-of-asparagus.html>

❧ सवालों के जवाब ❧

1. प्रश्न: पानी में बनाई रेमेडी को कितने दिनों तक रखा जा सकता है? क्या हमें उसे फ्रीज में रखना होगा? क्या हम उसमें विभूति मिला सकते हैं?

उत्तर: ढक्कन लगी बोतल में रेमेडी 7 दिनों तक रखी जा सकती है परंतु उसे फ्रीज में रखने का सुझाव हम नहीं देंगे। विभूति उसमें मिलाने की जरूरत नहीं है।

2. प्रश्न: अगर काम पर जानेवालों के लिए दोपहर की खुराक लेना संभव न हो तब TDS की जगह क्या दिन में दो बार, सुबह और रात में जोस लिया जा सकता है?

उत्तर: न लेने की अपेक्षा दिन में दो बार लिया जा सकता है परंतु TDS से सर्वोत्तम परिणाम मिलेंगे।

3. प्रश्न: ब्रश करने के तुरंत बाद क्या रेमेडी ली जा सकती है; क्या टूथपेस्ट से ब्रश करना कुछ खाने जैसा है? क्या पुदीने के स्वाद वाली टूथपेस्ट गोलीयों के कंपनों में हस्तक्षेप करेगी इसलिए हमें उसका इस्तमाल टालना चाहिए?

उत्तर: जी नहीं, ब्रश करने के बाद कम से कम 20 मिनट रुकना बेहतर होगा। पुदीने के स्वाद से कोई फरक नहीं पड़ता हर टूथपेस्ट के अपने कंपन होते हैं।

4. प्रश्न: मैं जब खाने के बाद बीस मिनट रुककर अपने बच्चों को गोलीयां देता हूँ तब भी उनके मुँह में अन्न के कण शेष नजर आते हैं, क्या ऐसी स्थिति में रेमेडी देना ठीक है?

उत्तर: अच्छे से कुल्ला करना और पानी पीकर अन्न कणों को मुँह से हटाना लाभदायक होगा। बेहतर होगा अगर कुछ खाने से 20 मिनट पहले रेमेडी दी जाए।

5. प्रश्न: एक से अधिक कॉम्बो मिलाकर रेमेडी बनाते समय क्या हमें बोतल को हर बूंद डालने के बाद 9 बार हिलाना होगा?

उत्तर: हर बूंद डालने के बाद हल्का हिला लीजिए और आखिरी बूंद के बाद अंग्रेजी 8 के अंक की आकृति में 9 बार हिलाइए। कुछ चिकित्सक खाली बोतल में बूंद डालते हैं फिर गोलीयां डालकर सामान्य तरीके से हिलाना

+++++

6. प्रश्न: त्वचा पर लगाने के मरहम संबंधी विविध प्रश्न

अ. प्रश्न: क्या मरीज को त्वचा पर लगाने के लिए प्लास्टिक के चम्मच द्वारा पात्र से मरहम निकालना होगा ताकी सारा मरहम बाधित न हो?

उत्तर: जीहां! यह सर्वोत्तम होगा।

ब. प्रश्न: हम पहली खुराक मरीज को स्वयं खिलाते हैं तब क्या पहली बार त्वचा पर मरहम भी हमें लगाकर देना चाहिए? अगर त्वचा में संसर्गजन्य संक्रमण हो तब भी?

उत्तर: जी नहीं! हम मरीज को छूते नहीं हैं। वें स्वयं मरहम लगा लेते हैं।

क. प्रश्न: क्या मरहम लगाने का अंतराल भी खुराक की तरह TDS होगा? क्या मरीज को मरहम रगड कर लगाना होगा? क्या पट्टी अथवा बैंडैड से त्वचा ढंकनी होगी?

उत्तर: जीहां! डोसेज दिन में तीन बार होंगे। त्वचा की स्थिति पर रगडना निर्भर होगा। उदाहरण के तौर पर खुले जख्म को मरहम लगाने के बाद पट्टी या बैंडैड बांधनी होगी। त्वचा बेहतर होने की स्थिति में मरहम लगाकर रगडना अच्छा होगा। कभी कभी रेमेडी को पानी में बनाकर त्वचा पर कपास के सहारे हल्का छोडना लाभदायक हो सकता है।

ड. प्रश्न: कॉमन कॉम्बो की बूंदें क्रीम अथवा जेली में मिलाने के लिए क्या जेली को गरम कर तरल बनाना होगा और फिर कॉम्बो की बूंदें डालकर प्लास्टिक के चम्मच से मिलाना होगा?

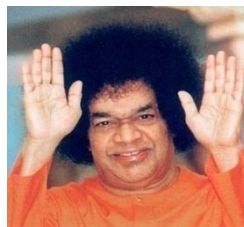
उत्तर: जी नहीं! गरम करने की आवश्यकता नहीं है। केवल एक बूंद डालकर लकड़ी अथवा प्लास्टिक के चम्मच से अच्छी तरह मिला लीजिए। फिर एक बूंद डालकर और अच्छे से मिलाइए। आपको यह प्रक्रिया 3 या 4 बार करनी पड सकती है (अगर जेली गाढी है) ताकि आप आश्वस्थ न हो जाए की कॉम्बो की बूंदें जेली अथवा क्रीम में अच्छी तरह मिल गई है।

इ. प्रश्न: क्या आंखों में अथवा कानों में डालने के लिए ड्रॉप्स बनाए जा सकते हैं? कैसे?

उत्तर: आंख, कान अथवा त्वचा के ड्रॉप्स बनाने के लिए द्वि-लक्षी पद्धति अपनानी चाहिए। आंखों के लिए ड्रॉप्स बनाने के लिए, कॉम्बो की एक बूंद 200 मि.ली. गुलाब जल अथवा स्त्रावण ज लमें मिलाइए फिर 20/30 मि.ली. की बोतलों में भरे।

चेतावनी: अगर आप एक बूंद सीधे 20/30 मि.ली. पानी में मिलाते हैं तब आंखों में वह चुभ सकता है! साथ ही हमने मरीज के मुंह में कॉम्बो की बूंदें कभी नहीं डालनी चाहिए। कानों के लिए, कॉम्बो की एक बूंद 20/30 मि.ली. प्राकृतिक जैतून तेल में मिलाकर अच्छे से हिलाइए।

Practitioners: Do you have a question for Dr. Aggarwal? Send it to him at news@vibrionics.org



ॐ रोग निवारण कर्ता के दैवी वचन ॐ

ॐ Divine Words from the Healer of Healers ॐ

“ शरीर मात्र एक नांव है जो जन्म मृत्यू रूपी सागर को पार करने का साधन है जिसे आपने जन्म जन्मों के पुण्य के फलस्वरूप पाया है। सागर पार करने का अर्थ है देही को पहचानना। देह का उद्देश्य देही को समझना है अतः जब तक शरीर सुदृढ और कुशलता से भरा है, दिमाग तेज और मन सचेत है, तब ही देही को जानने के प्रयास किए जाने चाहिए। शरीर को चुस्त, मजबूत और चिंतामुक्त रखिए। जैसे सागर पार करने के लिए नांव

का सही हालत में होना आवश्यक है ठीक उसी तरह आपका शरीर भी उद्देश्य की पूर्तियोग्य होना चाहिए।
उसकी अच्छी देखभाल किजिए। ...सत्य साईं बाबा के दि.3 अगस्त 1966 से

+++++
“ आलोचकों की आलोचना के बहाव में न आओ— उससे केवल आपका उत्साहवर्धन होना चाहिए। आपके भीतर निहित दोषों का परिक्षण करो तथा उन्हें दूर करने का इमानदारी से प्रयास करो। दान, सेवा, हमदर्दी, समता, सर्वधर्मसमभाव आदि गुणों पर मंच पर खड़े हो कर केवल भाषण न दो। मंच से नीचे उतरकर उनमें से कुछ एक को इमानदारी से कृति में लाओ। जब आपका पड़ोसी गंभीर रूप से बीमार हो तब स्वयं के बचजाने की खुशी में न रहो। एक व्यक्ति भी दुःखी या बंधन में हो तब आप कैसे मुक्त हो सकते हैं।

ध्यान रखो आपके द्वारा प्रत्येक जीव को दिया जाने वाला अन्न उस परमात्मा तक पहुंचता है, आपके द्वारा किसी के लिए कही भी की गई सेवा उसे प्रसन्न करती है।” ...सत्य साईं बाबा के दि. 25 फरवरी 1964 के प्रवचन से

+++++
“All the pains and pleasures one experiences are the results of their own actions and not due to any act of the Divine.”
- Sathya Sai Baba, Radio Sai 18 Feb 2013

ॐ Announcements ॐ

Forthcoming Workshops

- ❖ **UK London:** Annual vibrionics practitioners meet 14 April 2013, contact Jerambhai at 020-8551 3979 or by email at jeramjoe@gmail.com
- ❖ **Poland Wroclaw:** JVP workshop & refresher course for existing AVPs 27-28 April 2013.
- ❖ **Poland (venue to be decided):** Senior VP workshop 13-15 September 2013.
Contact Dariusz Hebisz +48 606 879 339 or by email at wibronika@op.pl
- ❖ **India Puttapparthi:** SVP workshop 15-20 July 2013, contact Hem at 99sairam@vibrionics.org
- ❖ **India Puttapparthi:** AVP workshop 23-27 July 2013, contact Hem at 99sairam@vibrionics.org
- ❖ **Greece Athens:** JVP and practitioners refresher workshops 21-23 September 2013.
Contact Vasilis at saivasilis@gmail.com or by telephone at +30-697-2084 999.

All Trainers: If you have a workshop scheduled, send details to: 99sairam@vibrionics.org

ATTENTION PRACTITIONERS

If your email address changes, please inform us at news@vibrionics.org as soon as possible.
Please share this information with other vibro practitioners.

You may share this newsletter with your patients. Their questions should be directed to you for answers or for research and response. Thank you for your cooperation.

Our website is www.vibrionics.org
Practitioners; you will need your assigned Vibro Registration number to access the Practitioner Portal.

Jai Sai Ram!

Sai Vibrionics. . . towards excellence in affordable medicare - free to patients